अंधों के लिए

ख़ुशख़बरी

अंधों के लिए

ख़ुशख़बरी

andhoṅ ke lie ḳhushḳhabrī

Good Message for the Blind

by W. Miller

(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK

published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

मुहतरम क़ारिईन! क्या आप किसी अंधे से वाक़िफ़ हैं? जब कभी आप अपने नाबीना दोस्त को मिलते होंगे तो आपका दिल यक़ीनन उसके लिए हमदर्दी से भर आता होगा। उसकी ज़िंदगी कितनी तारीक है! वह तुलूए-आफ़ताब की खूबसूरती से लुत्फ़अंदोज़ नहीं हो सकता। न वह रात को चाँदनी और सितारों की चमक-दमक का नज़ारा कर सकता, और न ही वह अपनी वालिदा मुहतरमा की मीठी मुसकराहट में राहतआमेज़ तसकीन पा सकता है। जब कभी आप किसी अंधे को देखते हैं तो क्या आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि आपके पास आँखें हैं जिनसे आप ख़ालिक़े-दोजहान की काइनात के अजायब देख सकते, कुतुबो-रसायल का मुतालआ कर सकते और इस जहान में दूसरों के लिए मुफ़ीद काम कर सकते हैं? बेशक! इनसान के लिए बीनाई ख़ुदा तआला की एक बेशबहा नेमत है।

क्या किसी अंधे के लिए दुबारा बीनाई हासिल करना मुमकिन है? बेशक रहीमो-रहमान ख़ुदा ने बाज़ डाक्टरों को बड़ी क़ाबिलियत

बख़्श रखी है, और उन्होंने ऐसे मुतअद्दिद अश्ख़ास का जो तक़रीबन अपनी बीनाई खो चुके थे कामयाब इलाज किया है। जहाँ तक मुमकिन हो सके, हर आँखों के मरीज़ को इलाज के लिए आँखों के किसी माहिर डाक्टर से रुजू करना चाहिए कि शायद बारी तआला अपनी रहमत से मुकम्मल अंधा होने से उसे बचा ले।

जब जहान के शाफ़ी हज़रत ईसा इस दुनिया में नूर बनकर तशरीफ़ लाए तो आपकी मुलाक़ात ऐसे अंधों से हुई जिन्हें कोई डाक्टर अच्छा न कर सकता था। इंजील मुनव्वरा (मरक़ुस 10:46-52) में इर्शाद है कि इस क़िस्म का एक अंधा बनाम बरतिमाई राह के किनारे बैठकर भीक माँगा करता था। उसके लिए गुज़र बसर का सिर्फ़ यही एक तरीक़ा था।

एक दिन बरतिमाई ने बहुत-से क़दमों की आहट सुनी। उसने दूसरों से पूछा कि क्या माजरा है? किसी ने जवाब दिया कि हज़रत ईसा शागिर्दों समेत इधर तशरीफ़ ला रहे हैं। यह सुनकर वह अंधा किस क़दर ख़ुश हुआ। यह उसके लिए कितना नादिर मौक़ा था। वह पूरे ज़ोर से चिल्लाने लगा, “ऐ ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

लोगों ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

तैयबे-जहान हज़रत ईसा हर एक के हमदर्द हैं। वह किसी भी की दरख़ास्त को रद्द नहीं करता। वह उस अंधे फ़क़ीर की पुकार को सुनकर ठहर गए और इर्शाद फ़रमाया, "उसे बुलाओ।"

चुनाँचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, "हौसला रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।"

यह सुनते ही उस अंधे फ़क़ीर ने अपनी चादर ज़मीन पर फैंक दी और उछलकर ईसा के पास आया।

हज़रत ईसा ने पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?"

उस ग़रीब ने क्या माँगा? क्या पैसे? क्या नए कपड़े? हरगिज़ नहीं। उसने वही शै माँगी जिसका वह सबसे ज़्यादा तालिब था। उसने कहा, "उस्ताद, यह कि मैं देख सकूँ।"

रहमते-आलमीन ईसा अल-मसीह ने इर्शाद फ़रमाया, "जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।"

आपने उस अंधे की आँखों को छुआ तक नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़बाने-मुबारक से कहा और उसकी आँखें बहाल हो गईं। अब बरतिमाई हर शै सफ़ाई से देखने लगा। अल-मसीह की क़ुदरत से उसे ज़िंदगी ही नई मिल गई। वह अपना कशकोल वहीं छोड़कर अपने शाफ़ी के पीछे हो लिया। अंधों को यों मोजिज़ाना तौर पर बीनाई अता करने से हज़रत ईसा ने अपने नूरे-जहान होने के दावे की वाज़िह तसदीक़ फ़रमाई।

जब कोई अपनी आँखों से सूरज की रौशनी को नहीं देख सकता तो हम कहते हैं कि वह अंधा है। लेकिन अफ़सोस है कि बाज़ हज़रात दोनों आँखें रखते हुए भी अंधे होते हैं। बेशक वह आसमान पर चमकते हुए सूरज को तो देख सकते हैं। लेकिन वह शम्से-हक़ीक़ी ख़ुदाए-बरहक़ की पहचान से महरूम हैं। बिलाशुबह हम अल्लाह तआला को अपनी जिस्मानी आँखों से नहीं देख सकते। लेकिन बातिनी आँखें यानी दिल की बसीरत से हम उसे पहचान सकते हैं। अगर आँख में गंद भर जाए तो हम सूरज को नहीं देख सकते। इसी तरह अगर हमारी बातिनी आँख यानी दिल झूट, नफ़रत, हसद, तकब्बुर और हर क़िस्म की बदी से भर जाए तो फिर हमें न तो कभी अल्लाह तआला का दीदार हासिल होगा और न ही उसका इल्म। चुनाँचे हज़रत ईसा ने इर्शाद फ़रमाया, "मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे" (इंजील जलील, मत्ती 5:8)।

लेकिन हर इनसान का दिल नापाकी से पुर है, और किसी को भी ख़ुदाए-क़ुद्दूस का दीदार हासिल नहीं होगा, जब तक कि उसके दिल का अंधापन दूर न हो जाए। क्या कोई ऐसा डाक्टर है जो इनसान के दिल की नापाकी को दूर कर के उसे रूहानी बीनाई अता कर सके?

एक ही है जो बसारत दे सकता है और वह है अनवारुल-आलमीन हज़रत ईसा। आपने न सिर्फ़ बरतिमाई को जिस्मानी आँखें बख़्शीं

बल्कि लाखों आदमियों को जो दिल के अंधे थे रूहानी बसारत अता फ़रमाई। आप आज भी उसी मोजिज़ाना क़ुदरत के साथ मौजूद हैं। जिस तरह आपने उस ज़माने में बरतिमाई को ठुकराया नहीं बल्कि उसे शिफ़ा बख़्शी, इसी तरह आप आज भी उन सबको जो रूहानी बीनाई के तालिब हैं ख़ुशआमदीद कहते हैं। आप हर कसो-नाकस को अपने पास आने की दावत दे रहे हैं। जो भी आप पर ईमान लाए उसे नया दिल, बातिनी बसारत और नई ज़िंदगी बतौरे-इनाम मिलेगी।